ईश्वर का बच्चा होने का गर्व

● ब्रह्माकुमार यशपाल सिंह, योल कैम्प, धर्मशाला (हि.प्र.)

मैं पेशे से अध्यापक हूँ। एक दिन बातों ही बातों में मेरी एक सह-अध्यापिका ने मुझे बताया कि टी.वी. पर ब्रह्माकुमारी शिवानी बहन का बहुत अच्छा कार्यक्रम रोज़ शाम 7.10 पर आस्था चैनल पर आता है। उनकी बात सुनकर मैंने वह कार्यक्रम देखा और मैं इतना प्रभावित हुआ कि प्रतिदिन देखने लगा। पत्नी व पुत्र द्वारा उस समय अन्य कार्यक्रम देखने की स्थिति में मैं इन्टरनेट पर बहन शिवानी के कार्यक्रम देखने लगा। मैं उनसे बहुत प्रभावित हो चुका था।

स्वप्न में ब्रह्माकुमारियों के दर्शन

मन में संकल्प उठा कि किसी ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर जाकर ज्ञान प्राप्त करूँ। एक रात स्वप्न में लगा कि किसी से ब्रह्माकुमारी आश्रम का पता पूछ रहा हूँ और उन्होंने दूर से ही मुझे आश्रम दिखाया। मैंने देखा कि वहाँ कई लोग बैठे थे और सफेद साड़ियाँ पहने ब्रह्माकुमारियाँ वहाँ खड़ी थीं। मैं उस ओर चल पड़ा परन्तु तभी मेरी आँखें खुल गई।

इन्टरनेट पर सेवाकेन्द्र की जानकारी

मैंने इन्टरनेट पर नज़दीकी सेवाकेन्द्र का पता प्राप्त किया। वह केन्द्र घर से 10 कि.मी. दूर था। मैंने सेवाकेन्द्र की बड़ी बहन से सम्पर्क किया। उन्होंने ज्ञान सीखने का निमन्त्रण दिया परन्तु मैं यह सोच कर वापिस लौट गया कि महिलाओं के पास जाना है तो किसी महिला अध्यापिका को साथ लेकर जाऊँगा। मैंने अपनी सह-अध्यापिका से किसी दिन ब्रह्माकुमारी आश्रम में साथ चलने का आग्रह किया परन्तु किन्हीं कारणों वश वे न जा सकी।

शिव के ध्वज ने दिखाया मार्ग

मैं मोटर साइकिल पर रोज़ जिस मार्ग से होता हुआ घर जाता हूँ, उसी मार्ग पर गगल नामक स्थान पर एक दिन भवन के ऊपर शिवध्वज देखा। उत्सुकतावश वहाँ मोटर साइकिल खड़ी की और देखा कि ऊपर वाली मंजिल पर ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र लिखा था। शिव बाबा स्वयं सीढ़ियाँ चढ़ा कर मुझे वहाँ ले गए। बहन मुझे ससम्मान ज्ञान-चर्चा के लिए ज्ञान-कक्ष में ले गई। इसके बाद मैं समय-समय पर इस (गगल) सेवाकेन्द्र पर जाने लगा और सहज राजयोग का कोर्स भी कर लिया। मेरी पत्नी ने भी पूर्ण कोर्स किया और इस शुभ कार्य में मेरा पूरा सहयोग दिया।

ईश्वर का बच्चा होने का गर्व

अब मुझे इस बात पर बहुत गर्व महसूस होता है कि मैं ईश्वर का बच्चा हूँ और ईश्वर ने मुझे स्वयं चुना है। मुझे परिवार सहित मधुबन जाने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ है। ❖

क्या खूब कहा

ग़रीब मीलों चलता है, भोजन पाने के लिए,
अमीर मीलों चलता है, उसे पचाने के लिए।
किसी के पास खाने के लिए एक वक्त की रोटी नहीं,
किसी के पास एक रोटी खाने के लिए वक्त नहीं।
कोई अपनों के लिए, अपनी रोटी छोड़ देता है,
कोई रोटी के लिए, अपनों को छोड़ देता है।
इंसान भी क्या चीज़ है!
दौलत बचाने के लिए सेहत खो देता है और
सेहत को वापिस पाने के लिए, दौलत खो देता है।
जीता ऐसे है जैसे कभी मरेगा ही नहीं,
और मर ऐसे जाता है जैसे कभी जीया ही नहीं।
एक मिनट में ज़िंदगी नहीं बदलती
पर एक मिनट में लिया गया फैसला, ज़िंदगी बदल देता है।